Chapter-7

===

अध्याय : सात :: उपसंहार ::

===

:: अध्याय : सात ::

:: उपसंहार ::

हिन्दी साहित्य के आधुनिक काल को , और मोटे तौर पर भारतीय साहित्य के आधुनिक काल को , निर्मित करने में , गढ़ने और बनाने में इस काल में उद्भूत नवजागरण की चेतना को नज़रअन्दाज़ नहीं कर सकते । बड़ी भूमिका रही है इस आंदोलन की । पराधीनता के आस्तरण से हमारी संस्कृति , इतिहास और दर्शन पर वक्त के थपेड़ों की धूल पड़ी हुई थी और परिणामतः हमारी दृष्टि धुंधला गई थी । समाज को ऐसी रूढ़ियों और परंपराओं ने जकड़ लिया था , जो उसकी मुकम्मिल प्रगति में बाधक सिद्ध हो सकती हैं । यहां यह गौर-तलब है कि परंपराएं या परंपरा का ज्ञान हमारे पथ का पाथेय बनना चाहिए , न कि बोझ , और जिस देश की परंपरा जितनी अधिक सुदीर्घ और विस्तीर्ण , उसे तो इस बात का सविशेष ध्यान रखना पड़ता है । परंपरा और रूढ़ि सनातन सत्य नहीं हुआ करते । बहुत-

सी परंपराएं और रूढ़ियां किसी युग विशेष की आवश्यकता के रूप में आती हैं ; परंतु कालान्तर में उसकी उपादेयता न रहने पर उसकी कोई उपयोगिता नहीं रह जाती । उसकी प्रासंगिकता समाप्त हो जाती है । प्रासंगिकता के समाप्त हो जाने के बाद भी उसे बेसबब, बेमतलब ढोना निरर्थक ही नहीं मूर्खतापूर्ण भी हो सकता है । उदाहरण के तौर पर "अरि" शब्द को ही ले सकते हैं । "अरि" का अर्थ कभी "पड़ोसी" हुआ करता था ; परंतु पड़ोसी राज्य से प्रायः शत्रुता रहती थी , अतः "अरि" का अर्थ ही शत्रु हो गया । और इस समीकरण के हिसाब से "अरि" का "अरि" मित्र माना गया और इस रूढ़ि , परंपरा , या समझ की झोंक में बाहर से आनेवाले आक्रमण-कर्ता को हमारे यहां के मूर्ख शासकों ने "अरि" का "अरि" मित्र मान लेने की हिमालय-सी बड़ी गलती की । दूसरे जब हमारा देश अनेक छोटे-बड़े राज्यों में विभाजित था , तब एक राज्य अपने पड़ोसी राज्य का शत्रु हो सकता था ; परंतु अब जब हम एक राष्ट्र हो गए हैं तब पड़ोसी होने के नाते महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश या राजस्थान गुजरात के शत्रु न होकर मित्र होंगे । शुक्र और कामंदक की रणनीति से अब काम नहीं चल सकता । महाभारत काल में रात्रि के समय युद्ध-विराम होता था , जबकि वर्तमान समय में तो रात्रि में ही ज्यादातर धावा बोला जाता है ।

अभिप्राय यह कि पुरानी परंपराओं और रूढ़ियों से केवल उनको ही ग्रहण करना चाहिए जो वर्तमान-सन्दर्भ में हमारे मतलब की हों । "तत्त तत्त गहि लहैं , थोथा देई उड़ाय " वाली नीति का अनुसरण करना ही वांछित होगा । अतः उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में यह जो नवजागरण की चेतना आई उसने हमारे यहां के चिंतकों और मनीषियों को नये ढंग से सोचने के लिए प्रेरित किया और उन्होंने ऐसी रूढ़ियों और परंपराओं को बहिष्कृत करने का आदेश दिया जो हमारे देश और समाज के विकास में

बाधक सिद्ध हो रही थीं । ऐसे चिंतकों और मनीषियों में हम दयानंद सरस्वती , राजा राममोहनराय , ईश्वाचन्द्र विद्यासागर , महात्मा ज्योतिबा फुले , विवेकानंद , नर्मद , दुर्गाशंकर मेहता प्रभृति को ले सकते हैं । इन महानुभावों के प्रयत्नों से आर्यसमाज , ब्रह्मोसमाज , प्रार्थनासमाज , थियोसोफी सोसायटी , धर्म-सुधार सभा जैसी संस्थाएं आयीं जिनके द्वारा सुधारवाद की प्रवृत्तियां प्रचारित व प्रसारित हुई । बाद में तिलक , गोखले , महात्मागांधी , रवीन्द्र , आंबेडकर , स्वामी श्रद्धानंदजी जैसे महानुभावों ने इस प्रवृत्ति को आगे बढ़ाया ; पर बुनियादी काम तो उक्त महानुभावों ने ही किया । हिन्दी के नवजागरण में मुख्यतः यह सुधारवादी चेतना ही कार्य कर रही है । इस नवजागरण की चेतना के कारण ही पंडित श्रद्धाराम फुल्लौरी , लाला श्रीनिवासदास , पंडित बालकृष्ण भट्ट , अयोध्या-सिंह उपाध्याय , मन्नन द्विवेदी प्रभृति लेखक आये ; जिन्हें हम अपने ऐतिहासिक कालक्रम में प्रेमचन्द-पूर्व काल के लेखक कहते हैं । प्रेमचन्द ने इस सुधारवाद की केन्द्रस्थ धुरी को थाम लिया और राष्ट्रीयता तथा स्वतंत्रता-आंदोलन जैसे नये आयामों के साथ उसे संपृक्त कर दिया ।

ऋषभचरण जैन इस प्रेमचन्द युग के साहित्यकार हैं । उनके समकालीनों में प्रेमचन्द के अतिरिक्त सर्वश्री विश्वम्भरनाथ शर्मा "कौशिक", आचार्य चतुरसेन शास्त्री , पांडेय बेचन शर्मा"उग्र " , सियारामशरण गुप्त, प्रतापनारायण श्रीवास्तव , वृन्दावनलाल वर्मा , राजा राधिकारमण-प्रसादसिंह , जयशंकर प्रसाद , सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला , श्रीनाथसिंह , उषादेवी मित्रा , तेजोरानी दीक्षित , शिवरानीदेवी , जैनेन्द्रकुमार, इलाचन्द्र जोशी , भगवतीचरण वर्मा , उपेन्द्रनाथ अश्क प्रभृति हिन्दी के जाने-माने साहित्यकार आते हैं । ऋषभजी के समग्र साहित्य पर एक विहंगम दृष्टिपात करने पर ऐसा ज्ञात होता है कि एक तरफ जहां वे प्रेमचन्द से प्रभावित हैं , वहां दूसरी तरफ वे उग्र तथा चतुरसेन शास्त्री आदि से भी प्रभाव ग्रहण करते हैं । "भाई" , "सत्याग्रह" , "मन्दिर-दीप" जैसी रचनाओं में वे प्रेमचन्द के निकट बैठते हैं , तो "रहस्यमयी"

"दिल्ली का कलंक" , जनानी सवारियाँ" , "मयखाना" प्रभृति उपन्यासों में उग्रजी तथा शास्त्रीजी का प्रभाव दिखता है जिनमें उन्होंने हमारे तथाकथित उच्चवर्ग या अभिजात वर्ग की विलासिता , रंगीनियों और व्याभिचारिक प्रवृत्तियों को बेपर्द किया है । वस्तुतः इन दो मुख्य धाराओं के अतिरिक्त एक तीसरी प्रवृत्ति भी हमें आलोच्य लेखक में मिलती है , वह है जैनेन्द्रीय मनोविश्लेषण की प्रवृत्ति । "तपोभूमि" , "भाग्य" , "मन्दिर-दीप" जैसे उपन्यास तथा "संयोग" , "सुधार की खोज" , "निग्रह" , "स्वर्ग की देवी" आदि कहानियों में हम इस प्रवृत्ति को लक्षित कर सकते हैं ।

"वेश्यापुत्र" , "रहस्यमयी" , "तीन इक्के" , "मयखाना" , "जनानी सवारियाँ" , "दिल्ली का कलंक" , " दिल्ली का व्यभिचार" प्रभृति औपन्यासिक कृतियों में उग्रशैली का जो घोर यथार्थवाद या नग्न यथार्थवाद मिलता है , उसे लेकर हिन्दी के कुछ आलोचकोंने उनकी परिगणना प्रकृतवादी या प्रकृतिवादी उपन्यासकारों के अन्तर्गत की है ; परन्तु यदि ध्यान से देखा जाय तो प्रकृतिवादियों के लेखन से इनके लेखन में समानता की अपेक्षा असमानता अधिक मिलेगी । केवल एक ही बात को लेकर उनकी चर्चा प्रकृतिवादियों के साथ होती है , और वह है उनका वस्तु-चयन । उन्होंने भी प्रकृतिवादियों की भाँति जीवन के अशिव , गंदे , घिनौने , बिभत्स , अश्लील रूप को विशेष-रूप से ग्रहण किया है ; परन्तु इसके पीछे प्रकृतिवादियों का जो वैज्ञानिक चिंतन है , उसका यहाँ सर्वथा अभाव है । दूसरे प्रकृतिवादियों का दृष्टिकोण एकदम अनालोचनात्मक होता है । वे जीवन के उक्त गंदे , अश्लील , बिभत्स रूप को चित्रित कर देते हैं , उसकी आलोचना नहीं करते या उन पात्रों को चित्रित करते समय उनके प्रति कोई हीन भाव नहीं रखते , क्योंकि वे मूलतः मानते हैं कि मनुष्य प्रकृत्या पशु ही है और उसकी यह सभ्यता और संस्कृतता केवल आस्तरण-मात्र है । वे मनुष्य को उसके मूल , आदिम , नग्न रूप में रखते हैं । जबकि

यहां पर इन लेखकों का दृष्टिकोण शुद्ध आलोचनात्मक प्रकार का रहा है । उन्होंने जीवन के गंदे-घिनौने पक्षों को लिया है , पर उसकी आलोचना की है । उन पात्रों के साथ उनकी संवेदना-सहानुभूति नहीं है । यहां वे तटस्थ नहीं रह पाए हैं । उन्होंने इन्हें जीवन के एक घृणित अंश या अंग के रूप में ही लिया है । ऋषभजी ने सुखवतीदेवी , रामजीदास , हर हाइनेस , हिज हाइनेस , माणिक सरदार , मुरारीलाल जैसे पात्रों की सृष्टि की है ; पर ये पात्र कभी उनके आदर्श नहीं रहे हैं । बल्कि उनकी भर्त्सना करने के लिए ही लेखक ने उनकी सृष्टि की है । वस्तुतः उनकी सहानुभूति और संवेदना तो दूसरे अपेक्षाकृत अच्छे पात्रों के साथ रही है । अतः इनके इस यथार्थवाद को हम आलोचनात्मक यथार्थवाद कह सकते हैं । रही बात "घोर" या "नग्न" यथार्थ की , तो उस गांधीवादी-मर्यादावादी युग को देखते हुए पाठक को उसमें कुछ ऐसी बातें दिखाई दे सकती हैं ; अन्यथा प्रेमचन्दोत्तर युग की प्रवृत्तियों को देखते हुए तो वे इक्कीस नहीं उन्नीस ही पड़ते हैं । "एक पति के नोट्स" {महेन्द्र भल्ला} , "मुरदाघर" {जगदंबाप्रसाद दीक्षित} , "मछली मरी हुई " {राजकमल चौधरी} , " सूरजमुखी अंधेरे के " {कृष्णा सोबती} , "किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई " , " कबूतरखाना" {शैलेश मटियानी} , "इमरतिया" {नागार्जुन} जैसे उपन्यासों में इससे भी अधिक घोर और नग्न यथार्थ है । वस्तुतः यह "घोर" और "नग्न" नहीं , यथार्थ है । जब जीवन में ही अनाचार , दुराचार, भ्रष्टाचार , बैभत्स्य है ; तो उपन्यासों में तो वह आयेगा ही । आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदीजी ने भी कहा है -- " उपन्यास में दुनिया जैसी है , वैसी चित्रित करने का प्रयास होता है । " और इसे अनुभूत सत्य कह सकते हैं कि जीवन में प्रायः आधिक्य बुराइयों का , बुरे और दुष्ट लोगों का ही रहा है ; अच्छे लोग हमेशा लघुमती में रहे हैं । अतः आलोच्य लेखक में भी हमें जीवन का यही पक्ष मिला है । बुरे लोग और बुराइयां हैं , उनका आधिक्य है , सर्वोपरिता है ; पर अल्प ही सही , अच्छे लोग और अच्छी प्रवृत्तियां भी हैं ।

स्त्री-पुरुष के यौन स्वेच्छाचार या स्वच्छंदता का खुल्ला चित्रण लेखक ने किया है । यहां एक बात ध्यातव्य है कि ऐसा चित्रण लेखक यदि तटस्थ दृष्टिकोण से करे तो हानिकारक नहीं है ; परंतु यदि वह स्वयं उसमें रस- ले-लेकर वर्णन करता है , स्वयं चटकारे लेता है , तो वहां कलात्मक संयम के चूक जाने के कारण वह शनैः शनैः ही अश्लीलता की ग्रीप में आता जाता है । आलोच्य लेखक में कहीं-कहीं ऐसा हुआ है , पर ऐसे स्थान बहुत कम हैं और केवल उन पात्रों के सन्दर्भ में हुआ है जिनका जीवन और चरित्र भ्रष्ट व घृणित है । परंतु जहां कोई पात्र विवशता और विपन्नता के कारण पतनोन्मुखी हुआ है ; वहां लेखक ने बहुत ही संयम से काम लिया है । लेखक की चरित्र-सृष्टि में वेश्याएं और तवायफें भी आई हैं , पर उनके चित्रण में वे चटखारे नहीं हैं । "मयखाना" , "चम्पाकली" , "हर हाइनेस" , "जनानी सवारियां" जैसी औपन्यासिक कृतियां तथा "स्वर्ग की देवी" जैसी कहानियों में हम इस तथ्य को लक्षित कर सकते हैं ।

प्रेमचन्द के लेखन में मुख्यतया ग्रामीण जीवन के यथार्थ को समेकित किया गया है । नगरीकरण , आद्योगीकरण जैसी प्रवृत्तियां सामंतकालीन वृत्तियों आदि से सृष्ट नव्य-समाज की बहुत -सी बातें प्रेमचन्द में अनाकलित रह गई है । अज्ञेय आदि कुछ लेखकों ने इस नव्य अभिजात वर्ग के शिष्ट पक्ष को तो लिया है ; परंतु उनके जीवन का वह पक्ष जिसमें उनकी बिभत्सता और नग्नता है , वह अनदेखा रह गया है । वस्तुतः हमारे लेखकों ने शोषित-वर्ग के जीवन की नारकीयता का चित्रण तो किया है ; परंतु इनका शोषण जिन लोगों के द्वारा हुआ है उनके जीवन के काले पक्षों को उजागर नहीं किया गया था । ऋषभचरण जैन के लेखन में हमें उसकी पूर्तता की प्रतीति होती है , बाद में यह प्रवृत्ति शैलेश मटियानी आदि लेखकों में दृष्टिगत हुई है । इस प्रकार कह सकते हैं कि सिक्के की दूसरी साईड़ को चित्रित कर लेखक ने एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति

की है ।

ऋषभचरण जैन की प्रतिभा बहुमुखी प्रकार की है । लेखक , प्रकाशक, पत्रकार , अनुवादक , फिल्म-वितरक , समाज-सुधारक यों उनके जीवन के कई पक्ष हमारे सामने आते हैं । एक लेखक के रूप में तो उन्होंने नव-जागरण काल की सुधारक प्रवृत्तियों को अपनी कृतियों के परिप्रेक्ष्य में रखी ही हैं और तत्कालीन सामाजिक , राजनीतिक , आर्थिक , सांस्कृतिक जीवन की अनेकानेक समस्याओं को यथार्थतः आकलित किया है ; परंतु प्रकाशक और पत्रकार के रूप में काम करके उन्होंने अनेक नवोदित लेखकों को प्रोत्साहित किया है । ऐसा कार्य उस युग में या तो प्रेमचन्दजी ने किया था , या ऋषभजी ने । जैनेन्द्रजी ने तो स्पष्ट शब्दों में एकरार किया है कि उनको लेखक ऋषभजी ने ही बनाया -- " मैं लेखक बना , ऐसा मालूम होता है कि खुद नहीं बन सकता था , ऋषभजी ने बनाया, मेरी पहली रचना छपी "मतवाला" में , ऋषभजी ने भेजी , ऋषभजी ने ही छपवाई । मेरा पहला कहानी संग्रह "फांसी" भी सन् 1929 में उन्होंने छापा । उसी पुस्तक के कारण क्रांतिकारी वर्ग जिसमें हमारे वात्स्यायनजी (अज्ञेय) भी थे , का ध्यान मेरी तरफ गया । उन्होंने ही मुझे उठाया और बढ़ाया । वे अत्यंत प्रतिभाशाली थे , प्रतिभाशाली काफ़ी नहीं है , अत्यंत भी लगाना पड़ता है । मैं तो हिन्दी के पूरे ही चित्र से परिचित हूं , मेरा परिचय लगभग सभी से है -- कह सकता हूं कि इतना प्रतिभाशाली कोई दूसरा मुझे नहीं मिला । ऋषभजी के संदर्भ में अत्यंत इसलिए कहना पड़ता है , क्योंकि वे सीमाओं को स्वीकार नहीं करते थे , चाहे वे सामाजिक नैतिकता की हो , प्रशासनिक या कानूनी हों या और प्रकार की हों , ऐसा मालूम पड़ता है कि सीमाओं का जहां पता चले -- सफलताओं की सीमा का भी पता चले -- उनके अतिक्रमण करने की उनकी इच्छा होती थी । साहित्य क्षेत्र में मेरे नाम में कुछ महत्व पड़ा तो वह "सुनीता" की वजह से पड़ा । ... इस तरह उनकी जोर-जबर्दस्ती से "सुनीता" लिखा गया । ... यानि कि मुझे हर तरह से -- हिम्मत बांधकर , दबाव डालकर जबरदस्ती लेखक बनाया । अब मेरे जीवन का , प्रतिष्ठा का

दारोमदार जिस पर है -- वो लेखन है , इतना उन्होंने मुझे बढ़ाया कि उसके बारे में क्या कहूं । " ("तपोभूमि" में दिया गया जैनेन्द्र का वक्तव्य) अतः ऋषभजी यदि और कुछ भी न करते तब भी उनका हिन्दी साहित्य पर एक महती ऋण रहता । जैनेन्द्र के अतिरिक्त भी उन्होंने अन्य कई नवोदित लेखकों को प्रोत्साहित किया था । "चित्रपट" और "सचित्र दरबार" के प्रकाशन के द्वारा उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में पदार्पण किया । "चित्रपट" में फिल्म की टेकनिक पर तो लेख होते ही थे , पर साथ ही हमारे मध्यवर्गीय समाज की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक चेतना भी उसमें प्रतिबिंबित होती है । राजनीतिक चेतना के रूप में कांग्रेस के इतिहास की झांकी भी उसमें देखने को मिलती है । इस प्रकार "चित्रपट" आधुनिक ज्ञान-विज्ञान , भाषा , साहित्य , संस्कृति , इतिहास , पुरातत्व आदि कई विषयों पर रचनात्मक एवं वैचारिक सामग्री प्रस्तुत करता था । "सुनीता" का धारावाहिक प्रकाशन उसीमें हुआ था । "सचित्र दरबार" तत्कालीन राज-रजवाड़ों से सम्बद्ध सामग्री रहती थी जिसके द्वारा ऋषभजी ने उन राज-रजवाड़ों को बेपर्द किया जो अंग्रेजों से मिलकर बुरी तरह अपनी प्रजा का शोषण करते थे । "हिज़ हाइनेस" , "हर हाइनेस" आदि रचनाएं इस अनुभव का परिपाक हैं । फिल्म-वितरण के व्यवसाय में यदि घाटा न खाया होता और विक्षिप्त न हो गये होते तो हिन्दी साहित्य को उनकी और भी सशक्त रचनाएं मिलतीं इसमें दो मत नहीं हो सकते ।

आजकल जिस "तुलनात्मक साहित्य " की चर्चा विशेषतः हो रही है , उस प्रवृत्ति के मूल में अनुवाद की प्रक्रिया पड़ी हुई है । अनुवाद के कारण ही "तुलनात्मक अभिगम" का सिंहद्वार खुल गया है । हिन्दी कथा-साहित्य जब अपनी प्रारंभिक अवस्था में था , तब तो इसका और भी महत्व था । उस समय प्रकाशित अनूदित रचनाओं ने हिन्दी कथा-साहित्य को असंदिग्ध रूप से

मार्गदर्शित किया है । इस क्षेत्र में ऋषभजी का जो प्रदान [illegible] अध्यायों में निर्दिष्ट किया जा चुका है । संक्षेप में कहा जा सकता है कि ऋषभजी एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार थे , जिन्होंने अपने समय की साहित्यिक चेतना और गतिविधियों न केवल उद्वेलित किया है , प्रत्युत उसकी समझ को भी एक कदम अग्रसरित किया है ।

"राजकुमार भोज" उनकी बाल-साहित्य की कृति है । प्रायः देखा गया है कि बड़े और स्थापित लेखकों ने बाल-साहित्य को उपेक्षा की नज़र से देखा है ; जबकि प्रत्येक बड़े लेखक का यह कर्तव्य बनता है कि वह इन नन्हे पौधों को लहलहाने में अपना कुछ योगदान दें । हमें ऋषभजी से और भी बाल-साहित्य की पुस्तकें मिल सकती थीं , यदि वह हादसा न हुआ होता । खैर , "राजकुमार भोज" बाल-साहित्य की दृष्टि से उनकी एक सशक्त रचना है , इसमें दो मत नहीं हो सकते ।

वास्तविक ऐतिहासिक उपन्यासों का सूत्रपात वृन्दावनलाल वर्मा द्वारा हुआ है , इस तथ्य को एकाधिक बार निर्दिष्ट किया जा चुका है । ऋषभजी ने इस दिशा में भी अपना विशिष्ट योगदान दिया है । ऐतिहासिक उपन्यासों के प्रणयन के पूर्व लेखक को शोध और अनु-संधान की जटिल प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है । तभी वह अपनी रचना में विश्वसनीय देशकाल का निर्माण कर सकता है । "गदर" और "सत्याग्रह" जैसी रचनाएं इस बात का प्रमाण हैं कि इस दिशा में भी लेखक काफ़ी कुछ कर सकते थे ।

"भाई" , "गदर" , "सत्याग्रह" , "तपोभूमि" , "मन्दिर-दीप" , "भाग्य" , "हिज हाइनेस" , "चम्पाकली" , "मयखाना", "ज़नानी सवारियां" प्रभृति औपन्यासिक रचनाएं तथा "दान तथा अन्य कहानियां " जैसे कहानी-संग्रहों को हम लेखक की उपलब्धि के रूप में ले सकते हैं । इनमें हमें तत्कालीन साहित्य के तीन सूत्र या प्रवाह प्राप्त होते हैं — प्रेमचन्दीय प्रवाह , जैनेन्द्रीय प्रभाव तथा

उग्र की व्यंग्यात्मक शैली ।

शिल्प और भाषाशैली की दृष्टि से लेखक का प्रदान नगण्य नहीं है । यद्यपि शिल्प की दृष्टि से उनकी रचनाओं में हमें केवल दो ही कथा- रीतियां उपलब्ध होती हैं -- वर्णनात्मक या विश्लेषणात्मक और आत्मकथनात्मक । परंतु जैसे गोस्वामी तुलसीदास ने लघु-गुरु मात्राओं के वैविध्य से चौपाइयों में अनेकविधता लाने का यत्न किया है ; ठीक उसी प्रकार ग्रबभजी ने भी उक्त दो टेकनिकों में अन्य अनेकानेक प्रयुक्तियों के द्वारा शिल्पगत प्रयोग किये हैं । "हिज़ हाइ-नेस" में आत्मकथनात्मिक पद्धति है , पर इसे पात्रात्मकता का रूप दिया गया है । बाद में यही पद्धति हमें नागार्जुन के "इमरतिया" उपन्यास में मिलती है । "तपोभूमि" में दो प्रकार के प्रयोग मिलते हैं -- एक तो "सहलेखन" का और दूसरे यहां भी वही पात्रात्मक विधि है , परंतु "हिज़ हाइनेस" से वैभिन्य इस अर्थ में है कि यहां प्रत्येक पात्र अपनी कथा केवल एक बार ही कहता है , जबकि "हिज़ हाइनेस" में कथा के पांच दौर चले हैं । "ज़नानी सवारियां" में कहानी-दर-कहानी की पद्धति को लेखक ने अंगीकृत किया है । इस उपन्यास की सारी कहानियों के फूलों को रामजी नामक पात्र के धागे से एक सूत्र में पिरोया गया है । दूसरे उक्त दो पद्धतियों में उन्होंने कथा की आवश्यकतानुसार पत्र , आत्म-संभाषण , आत्म-विश्लेषण , पात्र-विश्लेषण , स्वप्न , पूर्वदीप्ति , शब्द-सह-स्मृति जैसी नानाविध कथन-रीतियों का गौण रूप से प्रयोग किया है ।

ऋऋ किसी भी साहित्य के लेखक के मूल्यांकन का एक मानदण्ड यह भी होता है कि उसने अपनी भाषा को कितना आगे बढ़ाया , कितना समुन्नत किया , उसकी शब्द-संपदा में कितनी अभिवृद्धि की और भाषाकीय दृष्टि से उसे कितना समृद्ध किया । इस कसौटी पर ग्रबभजी खरे उतरते हैं । उनकी भाषा में एक रवानी है , एक प्रवाह है , एक जोश है । कहावत और मुहावरों के प्रयोग से प्रतीति

होती है कि लेखक का जीवन्त भाषा से संपर्क है , अन्यथा "इन्सान टके की हांडी भी ठोक-बजाकर लेता है " या " माँ डायन होगी तो क्या पूत को भी खा जायेगी " जैसी कहावतें तथा "इमली के पत्ते पर ऊँटxबै× दण्ड पेलना" , " लंका बनकर आना" , " बात पर हाशिया चढ़ाना" जैसे मुहावरे न मिलते । भाषाशैली के सन्दर्भ में लेखक ने प्रेम-चन्द तथा उग्र की शैली का अनुसरण किया है । अरबी-फारसी के शब्दों का भी छूट से प्रयोग किया है । कहीं-कहीं अंग्रेजी शब्दों तथा वाक्यों का भी प्रयोग मिलता है । राल्फ फोक्स महोदय का यह कथन कि "उपन्यास मानव-जीवन का गद्य है " यहाँ पूर्णतया सफल हु व सार्थक हुआ है । "तुफैल" , "वक्तन-फुवक्तन" , "तालीमयाफ्ता" , "वलीअहद", "अंगुश्तनुमाई" , "किफायतशारी" , "तहय्या" जैसे शब्द-प्रयोग तथा "भावनाओं का इंजेक्शन" , "रायबहादुरी के स्टेशन का टिकट" , "स्नेह की पक्की रसीद" , "वाकिफ़ियत का नियाज़ " जैसे नये रूपक इस बात की प्रतीति कराते हैं कि भाषा पर लेखक का पूर्ण अधिकार है और उससे वह अपना मनचाहा काम ले सकता है ।

अन्ततः यही निवेदित है कि मेरी अपनी सीमाएं हैं , यदि यह शोध-कार्य आगामी अनुसंधित्सुओं के पथ को यत्किंचित भी आलोकित कर सका , तो मैं अपने को कृतार्थ समझूंगी । इस दिशा में अभी और शोध-कार्य हो सकते हैं । युगबोध और उसके निरूपण को लेकर स्वतंत्र अध्ययन को अवकाश है । ऋषभजी की केवल भाषा को लेकर अलग से अध्ययन हो सकता है ।

इस समूची शोध-प्रक्रिया के दौरान मैंने स्वयं अपने में कुछ परिवर्तन देखा है । मेरा यह कार्य मुझे शोध व समीक्षा की दिशा में और भी अग्रसरित करे ऐसी मेरी कामना है ।

—: इति शुभम् :—

:: संदर्भिका ::

:: सन्दर्भिका ::

परिशिष्ट §1§ : उपजीव्य-ग्रंथों की सूची : *

§1§ अफीम का अड्डा §अनूदित§

§2§ अनासक्त तथा अन्य कहानियां §कहानी-संग्रह§

§3§ कैदी §अनूदित§

§4§ कंठहार §अनूदित§

§5§ गदर §उपन्यास§

§6§ चम्पाकली §उपन्यास§

§7§ जनानी सवारियां § उपन्यास§

§8§ तपोभूमि §उपन्यास§

§9§ तीन इक्के §उपन्यास§

§10§ दिल्ली का कलंक §उपन्यास§

§11§ दिल्ली का व्यभिचार §उपन्यास§

§12§ दुराचार के अड्डे §उपन्यास§

§13§ देवदूत § अनूदित§

§14§ दान तथा अन्य कहानियां §कहानी-संग्रह§

§15§ पैसे का साथी §उपन्यास§

§16§ बुर्केवाली तथा अन्य कहानियां §कहानी-संग्रह§

§17§ बादशाह की बेटी § अनूदित§

§18§ भाई §उपन्यास§

§19§ भाग्य §उपन्यास§

§20§ मन्दिर-दीप §उपन्यास§

§21§ मास्टरसाहब §उपन्यास§

§22§ मयखाना § उपन्यास§

§23§ महापाप§ अनूदित§

---

* इन सब ग्रंथों के लेखक ऋषभचरण जैन हैं और प्रकाशक हैं :- ऋषभचरण जैन एवं संतति :21 , दरियागंज , नई दिल्ली - 110002 ।

§24§ रहस्यमयी §उपन्यास§

§25§ राजकुमार भोज §बाल-साहित्य का उपन्यास§

§26§ वैश्यापुत्र §उपन्यास§

§27§ सत्याग्रह §उपन्यास§

§28§ षडयन्त्रकारी § अनूदित§

§29§ हिज़ हाइनेस §उपन्यास§

§30§ हर हाइनेस §उपन्यास§

§31§ हड़ताल तथा अन्य कहानियां § कहानी-संग्रह§

परिशिष्ट §2§ : सहायक-ग्रंथ सूची : /हिन्दी/ :

§1§ अपराजिता §उप. § आचार्य चतुरसेन शास्त्री : गंगा पुस्तकमाला : लखनऊ ।

§2§ अxभx अभिनव सूक्ति-कोश §कोश-ग्रंथ§ : शरण : पंचशील प्रका. जयपुर ।

§3§ आधुनिक साहित्य : एक परिदृश्य : अज्ञेय : भारतीय ज्ञानपीठ :वारा.

§4§ आज का हिन्दी उपन्यास : डा. इन्द्रनाथ मदान : राजकमल , दिल्ली

§5§ आभा§उप.§ आचार्य चतुरसेन शास्त्री : दरबार प्रका. दिल्ली ।

§6§ आधुनिक हिन्दी साहित्य का विकास: डा. श्रीकृष्णलाल : हिन्दी परिषद प्रकाशन : प्रयाग ।

§7§ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल : डा. शिवनारायण : शुक्ल साधना-सदन: कानपुर ।

§8§ आधुनिक साहित्य : आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी : भारती-भण्डार : इलाहाबाद ।

§9§ आज की कहानी : विजयमोहन सिंह : राधाकृष्ण : दिल्ली ।

§10§ आधुनिक लेखिकाओं के नगरीय परिवेश के उपन्यास : डा. पारूकांत देसाई : चिंतन प्रकाशन : कानपुर ।

§11§ इमरतिया §उप.§ : नागार्जुन : राजकमल : दिल्ली ।

§12§ उद्धरणकोश §कोशग्रंथ§ : डा. भोलानाथ तिवारी : बुक्स एण्ड बुक्स : दिल्ली ।

§13§ एक टुकड़ा इतिहास :§उप.§ : गोपाल उपाध्याय : सामयिक प्रकाशन : दिल्ली ।

§14§ ऋषभचरण जैन : जीवन झांकी : ऋषभचरण जैन एवं संतति: दिल्ली ।

§15§ कलम का सिपाही : अमृतराय : हंस प्रका. इलाहाबाद ।

§16§ कथांतर : डा. परमानंद श्रीवास्तव : राजकमल : दिल्ली ।

§17§ कुछ विचार : प्रेमचन्द : हंस प्रकाशन : इलाहाबाद ।

§18§ काव्य के रूप : बाबू गुलाबराय : आत्माराम एण्ड सन्स : दिल्ली ।

§19§ किस्सा नर्मदाबेन गंगूबाई §उप.§ शैलेश मटियानी : उपरिवत् ।

§20§ गुजराती निबंधमाला : नवनीत प्रकाशन : अहमदाबाद ।

§21§ गोदान : प्रेमचन्द : हंस× सरस्वती प्रेस : इलाहाबाद ।

§22§ चिंतामणि भाग-1 : आ. रामचन्द्र शुक्ल ।

§23§ जनजातीय जीवन और संस्कृति : डा. राजीवलोचन शर्मा : सहचारी प्रकाशन प्रसारण : कानपुर ।

§24§ त्यागपत्र §उप.§ : जैनेन्द्र : पूर्वोदय प्रकाशन : दिल्ली ।

§25§ देसाई-सतसई §पाण्डु-लिपि§ : डा. पारूकांत देसाई ।

§26§ धरती धन न अपना : जगदीशचन्द्र : राजकमल : दिल्ली ।

§27§ पाश्चात्य काव्यशास्त्र : मार्क्सवादी परंपरा : सं. डा मक्खनलाल शर्मा : मू.ले. राल्फ फाक्स : अनु. गार्गी गुप्ता ।

§28§ प्रेमचन्द और उनका युग : डा. रामविलास शर्मा : राजकमल: दिल्ली ।

§29§ प्रेमचन्द-युग का हिन्दी उपन्यास : डा. मोहनलाल रत्नाकर : ऋषभचरण जैन एवं संतति : दिल्ली ।

§30§ प्रेमचन्द : व्यक्ति और साहित्यकार : डा. मन्मथनाथ गुप्त : सरस्वती प्रेस : इलाहाबाद ।

§31§ प्रेमचन्द : चिट्ठीपत्री : सरस्वती सरस्वती प्रका. इलाहाबाद ।

§32§ पत्थर-अल-पत्थर §उप.§ उपेन्द्रनाथ अश्क : नीलाभ प्रकाशन : इलाहाबाद ।

§33§ बिजली के फूल §काव्य-संग्रह§ : डा. पारूकांत देसाई : रोमा प्रकाशन : बड़ौदा ।

§34§ बरफ की चट्टानें §कहानी-संग्रह§ शैलेश मटियानी : सचिन प्रकाशन : नई दिल्ली ।

§35§ भारतीय सामाजिक समस्याएं : डा. एम.एल. गुप्ता : साहित्य भवन : आगरा ।

§36§ भारत का सांस्कृतिक इतिहास : डा. हरिदत्त वेदालंकार : चौखम्बा : वाराणसी ।

§37§ मैंने स्मृति के दीप जलाये : रामनाथ सुमन : राजपाल : दिल्ली ।

§38§ मानवधर्म के दस मूल-मंत्र : ऋषभचरण जैन : ऋषभचरण जैन एवं संतति: दिल्ली ।

§39§ मानसमाला §दोहा-संग्रह§ : डा. पारूकांत देसाई : कृष्णा प्रकाशन: जयपुर ।

§40§ मेरी कहानी : नेहरू ।

§41§ महाराव लखपतसिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व : डा. के.एम. शाह : युनि. प्रकाशन : बड़ौदा ।

§42§ मिलन के क्षण चार §गीत-संग्रह§ : डा. पारूकांत देसाई : रोमा प्रकाशन : बड़ौदा ।

§43§ मन्नू भण्डारी के कथा-साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन : डा. ममता शुक्ला : जवाहर पुस्तकालय : मथुरा ।

§44§ महानगर की मीता §उप.§ रजनी पनीकर : सेतु प्रकाशन : दिल्ली ।

§45§ युगनिर्माता प्रेमचन्द तथा कुछ अन्य निबंध : डा. पारूकांत देसाई : रोमा प्रकाशन : बड़ौदा ।

§46§ रंगभूमि §उप.§ : प्रेमचन्द : सरस्वती प्रेस : दिल्ली ।

§47§ राग दरबारी §उप.§ श्रीलाल शुक्ल : राजकमल प्रकाशन : दिल्ली ।

§48§ लज्जा : तस्लीमा नसरीन : वाणी प्रकाशन : दिल्ली ।

§49§ "वृन्दावनलाल वर्मा : साहित्य और समीक्षा " : डा. सियाराम शरण प्रसाद : साहित्य प्रकाशन : दिल्ली ।

§50§ विवेक के रंग : सं. डा. देवीशंकर अवस्थी : भारतीय ज्ञानपीठ ।

§51§ समीक्षायण : डा. पारूकांत देसाई : सूर्य-भारती प्रकाशन : दिल्ली ।

§52§ साहित्यालोचन : डा. श्यामसुंदरदास ।

§53§ सूखे सेमल के वृन्तों पर §काव्य-संग्रह§ : डा. पारूकांत देसाई : पाण्डुलिपि ।

§54§ सेवासदन §उप.§ प्रेमचन्द : सरस्वती प्रेस : दिल्ली ।

§55§ साहित्यिक निबंध : सं. डा. बद्रिनाथ तिवारी : साहित्य भवन §प्रा. लि.§ , इलाहाबाद ।

§56§ संभोग से समाधि की ओर : ओशो [illegible] रजनीश ।

§57§ साठोत्तरी हिन्दी उपन्यास : डा. पारूकांत देसाई : सूर्य प्रकाशन : दिल्ली ।

§58§ साहित्यिक सुभाषित कोश §कोशग्रंथ§ : डा. हरिवंशराय शर्मा : राजपाल एण्ड सन्स : दिल्ली ।

§59§ सार्थक कहानियां : सं. दूधनाथसिंह : सुमित्र प्रकाशन : इलाहाबाद ।

§60§ श्री तन्सुखराम स्मृतिग्रंथ : ऋषभचरण जैन एवं संतति : दिल्ली ।

§61§ हिन्दी उपन्यास : सं. भीष्म साहनी , रामजी मिश्र : राजकमल प्रकाशन : दिल्ली ।

§62§ हिन्दी साहित्यकोश भाग-1 : सं. डा. धीरेन्द्र वर्मा : ज्ञानमण्डल लिमिटेड , वाराणसी ।

§63§ हिन्दी उपन्यास : पहचान और परख : डा. इन्द्रनाथ मदान : लिपि प्रकाशन : दिल्ली ।

§64§ हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन : डा. गणेशन : राजपाल एण्ड सन्स : दिल्ली ।

§65§ हिन्दी साहित्यका इतिहास : आ. रामचन्द्र शुक्ल : हिन्दी प्रचारिणी सभा : वाराणसी ।

§66§ हिन्दी उपन्यास पर पाश्चात्य प्रभाव : डा. भारतभूषण अग्रवाल : ऋषभचरण जैन एवं संतति : दिल्ली ।

§67§ हिन्दी उपन्यास : उद्भव और विकास : डा. सुरेश सिन्हा : अशोक प्रकाशन : दिल्ली ।

§68§ हिन्दी उपन्यास :एक अन्तर्यात्रा : डा. रामदरश मिश्र : राजकमल प्रकाशन : दिल्ली ।

§69§ हिन्दी साहित्य का संक्षिप्त सुगम इतिहास : डा. पारूकांत देसाई : कृष्णा प्रकाशन : जयपुर ।

§70§ हिन्दी उपन्यास : प्रेमचन्दोत्तरकाल : डा. रामशोभितप्रसाद सिंह : श्रवमचरण जैन एवं संतति : दिल्ली ।

§71§ हिन्दी उपन्यास-कोश : डा. गोपालराय : ग्रंथ निकेतन : पटना ।

§72§ हिन्दी उपन्यास साहित्य का शास्त्रीय विवेचन : डा. श्रीनारायण अग्निहोत्री : शक्ल-साधना सदन : कानपुर ।

§73§ हिन्दी उपन्यास कोश भाग-2 : डा. गोपालराय : ग्रंथ निकेतन, पटना ।

§74§ हिन्दी उपन्यास में कथा-शिल्प का विकास : डा. प्रतापनारायण टण्डन : हिन्दी साहित्य भण्डार : लखनऊ ।

§75§ हिन्दी पुस्तक साहित्य : डा. माताप्रसाद गुप्त ।

§76§ हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद : डा. त्रिभवनसिंह : हिन्दी प्रचारक संस्थान : वाराणसी ।

§77§ हिन्दी उपन्यास साहित्य की विकास-परंपरा में साठोत्तरी उपन्यास : डा. पारूकांत देसाई : शोध-प्रबंध : म.स. यूनि. बड़ौदा ।

§78§ हौलदार §उप.§ : शैलेश मटियानी : आत्माराम एण्ड सन्स: दिल्ली ।

परिशिष्ट §3§ : सहायक-ग्रंथ सूची /अंग्रेजी/ :

§1§ एन ए.बी.क्षेड़ आफ लव : इंगे एण्ड स्टेन हेलर : नेविल स्पीअरमेन, लंडन ।

§2§ एन इन्ट्रडक्शन टु द स्टडी आफ लिटरेचर : हडसन : ज्योर्ज जी. हैरप: लंडन ।

§3§ क्रिमिनोलोजी : कार्डविल : मैकमीलन : लंडन ।

§4§ क्रिमिनालिटी एण्ड इकोनोमिक कंडिशन्स : डबल्यू. ए. बोंगर : ज्योर्ज एलन : लंडन ।

§5§ एनसायक्लोपीडिया सायन्सिस : कार्ल प्रिब्रेम : आक्सफर्ड यूनि. प्रेस: न्यूयोर्क ।

§6§ इरोटिक आर्ट आफ इण्डिया : फिलिप रासन : गैलरी बुक्स : न्यूयोर्क ।

§7§ इण्डियाज़ क्वेस्ट : नेहरू : एशिया पब्लिशिंग हाउस : दिल्ली ।

§8§ मेमोरिज़ एण्ड पोर्ट्रेट्स : स्टीवेन्सन्स ।

§9§ लाइफ एण्ड वर्क आफ प्रेमचन्द : डा. मनोहर बंदोपाध्याय : पब्लिकेशन डिविज़न : गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया : दिल्ली ।

§10§ रिपोर्ट आफ द टेंकचन्द स्टडी आफ प्रोहिबिशन , वोल्यूम-। : पब्लिकेशन डिविज़न : दिल्ली ।

§11§ रिपोर्ट आफ द एडवाइज़री कमिटि ओन सोसियल एण्ड मोरल हाइजिन : उपरिवत् ।

§12§ सोशल डिसआर्गेनाइजेशन : एलियट एण्ड मैरिल ।

§13§ सेक्स इन रीलेशन टु सोसायटी : हैवलोक एलिस : ज्योर्ज एलन : लंडन ।

§14§ द नोवेल एण्ड ए मोडर्न गाइड टु फिफ्टिन इंग्लिश मास्टरपीसिस : एच. बटरफिल्ड : केम्ब्रिज़ यूनि. प्रेस ।

§15§ द नोवेल एण्ड द मोडर्न वर्ल्ड : डेविड डिकन्स : शिकागो यूनि. प्रेस।

§16§ अर्बन सोसियोलोजी इन इण्डिया : आशिष बोज़ : वर्ल्ड प्रेस : कलकत्ता ।

§17§ राइटर्स एट वर्क : फर्स्ट सिरीज़ : वाल्टर एलन : फोनिक्स हाउस : लंडन ।

§18§ सेक्स : ए युजर्स मेन्युअल : द डायाग्राम ग्रुप : बास्ले : फ्रान्स ।

§19§ द सेक्स-लाईफ फाइल : एस.जे. तुफिल : ग्रेनेडा पेपरबेक्स : लंडन ।

परिशिष्ट §4§ : पत्र-पत्रिकाएं :

§1§ एतद §गुज. पत्रिका§

§2§ कैरेवान § अंग्रेजी पत्रिका§

§3§ चित्रलेखा §गुज. साप्ताहिक§

§4§ चित्रपट

§5§ धर्मयुग

§6§ नवभारत टाइम्स

§7§ नया जीवन

§8§ माया

§9§ माधुरी

§10§ साहित्य-संदेश

§11§ संदेश §गुज. दैनिक§

§12§ सरस्वती

§13§ सुधा

§14§ हंस

§15§ प्रकर

§16§ दस्तावेज

===== XXXXXX ======